https://universitynews.in/

M.A. (Final) EXAMINATION, 2018

SANSKRIT

Fourt Paper (निबन्धं, व्याकरणम्, अनुवादः व्युत्पत्ति प्रदर्शनञ्च)

(सभी वर्गों के लिए अनिवार्य)

Time allowed : Three hours **Maximum marks : 100**

1. निम्नलिखितेषु एकं विषयमधिकृत्य त्रिपृष्ठात्मकोनिबन्धः संस्कृतभाषायां लेखनीयः-
   (क) वेदोऽखिलोधर्ममूलम्।
   (ख) वेदाङ्गसाहित्य स्वरूपम्।
   (ग) कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्।
   (घ) भारवेरर्थगौरवम्। (ङ) रीतिरात्माकाव्यस्ये।
   (च) काव्यस्वरूपम्। (छ) भारतीयदर्शनानि तेषां वैशिष्ट्यञ्च।
   (ज) आधुनिक संस्कृत पद्य साहित्यम्।
   (झ) धर्मशास्त्रे मनुस्मृतेः महत्त्वम्।
   (ञ) आधुनिक प्रमुखसंस्कृतगद्यकाराः तद्रचनावैशिष्ट्यम्। 20

2. अधोलिखितेषु त्रयाणां पदानां सूत्रोल्लेखपूर्वकं विभक्तिः लिखत-
   (क) दैत्याः हरये क्रुध्यन्ति। (ख) मोहनः अक्ष्णा काणः अस्ति।
   (ग) पुत्रेण सह आगतः पिता। (घ) रामेण बाणेन हतो बाली।
   (ङ) बलिं याचते वसुधाम्। (च) कृष्णः स्थाल्यां पचति। 3×2

3. अधोलिखितेषु सूत्रेषु त्रयाणां सोदाहरणं व्याख्या कार्या-
   (क) यतश्च निर्धारणम्। (ख) भीत्रार्थानां भयहेतुः।
   (ग) नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषड्योगाच्च।
   (घ) वारणार्थानामीप्सितः। (ङ) अपवर्गेतृतीया।
   (च) उपान्वध्यावसः। 3×3

4. केषाञ्चित पञ्चपदानां सूत्रोल्लेखपूर्वकं सिद्धिः कार्या-
   (क) कर्ता। (ख) नन्दनः।
   (ग) प्रियः। (घ) गृहम्।
   (ङ) उष्णभोजी। (च) भिन्नः।
   (छ) पक्वः। (ज) जल्पाकः।
   (झ) रागः। (ञ) कृतिः। 5×2

5. कयोश्चिद् द्वयो : सूत्रयोः सोदाहरणं व्याख्या कार्या-
   (क) एजेः खश्। (ख) कर्मण्यण्।
   (ग) कालसमयवेलासु तुमुन्। (घ) ऋदोरम्। 2×2½

6. कयोश्चिद् द्वयोः सूत्रोल्लेखपूर्वकं रूपसिद्धिः कार्या-
   (क) चटका। (ख) कुमारी।
   (ग) गोपी। (घ) दाक्षी। 2×2½

https://universitynews.in/

https://universitynews.in/

7. केषांचित् त्रयाणां सूत्राणां उदाहरणपूर्वकं व्याख्या विधेया–
(क) अव्ययीभावे शरत् प्रभृतिभ्यः। (ख) सप्तमी शौण्डैः।
(ग) उपमानानि सामान्य वचनैः। (घ) चाऽर्थे द्वन्द्वः।
(ङ) पितामात्रा। (च) संख्यापूर्वी द्विगुः। 3×3

8. कयोश्चिद् द्वयोः पदयोः रूपसिद्धिः कार्या–
(क) पञ्चगङ्गम्। (ख) यूपदारू।
(ग) ईश-कृष्णौ। (घ) नीलोत्पलम्। 2×3

9. कयोश्चिद् द्वयोः सूत्रयोः सोदाहरणं व्याख्या कार्या–
(क) गर्गादिभ्यो यञ्। (ख) स्त्रीभ्यो ढक्।
(ग) तेनरतं रागात्। (घ) तस्य निवासः। 2×2½

10. कयोश्चिद् द्वयोः पदयोः सूत्रनिर्देशपूर्वकं रूपसिद्धिः कार्या–
(क) बन्धुता। (ख) शिक्षकः।
(ग) पौरुः। (घ) दाक्षिः। 2×2½

11. अधोलिखितेषु पञ्चवाक्यानि शोधयन्तु–
(क) हरिः वैकुण्ठे अधिवसति। (ख) भवान् कुत्र गच्छसि।
(ग) ग्रामस्य समया क्षेत्राणि अस्ति। (घ) रामस्य सह सीता वने जगाम।
(ङ) जयन्तः नेत्रात् काणः आसीत्। (च) कर्णः निर्धनानां धनं ददाति।
(छ) रावणः रामं क्रुध्यति। (ज) गोमयेन वृश्चिकाः जायन्ते।
(झ) बाहनेन चालकः पतति। (ज) रामः कटं आस्ते। 5×1

12. अधोलिखितस्य श्लोकस्य अनुवादः विधेयः–
किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा,
यश्राश्रिताश्च तखस्तखस्ते एव।
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण,
कङ्कोल निम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः। 5

अथवा

नैवाऽऽकृतिः फलति नैव कुलं न शीलं,
विद्यापि नैव न च यत्नकृताऽपि सेवा।
भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि,
काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः। 5

13. अस्य अवतरणस्य संस्कृतभाषयामनुवादः विधेयः–
दूसरों के साथ शिष्ट और विनीत व्यवहार का नाम नम्रता है। नम्र व्यक्ति दूसरों का भला चाहता है और प्रयत्न करता है कि उसके किसी भी कार्य से किसी को हानि न पहुँचे। विनीत व्यक्ति परोपकारी, परहित चिन्तक और परदुःखकातर होता है। वह अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन करता है। ऐसे वचन कभी भी उच्चारण नहीं करता है, जिससे किसी की आत्मा को दुःख पहुँचे। विद्या का लक्ष्य बताया गया है कि वह मनुष्य को नम्रता प्रदान करती है।

https://universitynews.in/

https://universitynews.in/

नम्रता मनुष्य को लोकप्रिय बना देती है। नम्र व्यक्ति सदा उन्नति की ओर अग्रसर होता है। सभी उसके शुभचिन्तक होते हैं। 10

अथवा

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मनुष्य का प्रकृति के साथ अटूट सम्बन्ध है। प्रकृति मनुष्य को जीवन शक्ति प्रदान करती है। निराश, खिन्न और असहाय हृदय में भी आशा का संचार करती है। एक ओर प्रकृति न ही हमारे सुख साधन के लिये नदी, वृक्ष, फूल और फलों का साज लेकर खड़ी है। वाटिका में फलों एवं फूलों का अनुपम सौन्दर्य किसके मन को मुग्ध नहीं करता है। सूर्योदय और सूर्यास्त की निराली छटा निर्जीव हृदय को भी सजीव बना देती है। रात्रि में आकाश की अपूर्व छटा किसके हृदय को आवर्जित नहीं करती।

https://universitynews.in

https://universitynews.in/